अन्याय जिधर, है शक्ति उधर
(शक्ति की मौलिक कल्पना के विशेष सन्दर्भ में महाकवि निराला की 'राम की शक्तिपूजा' का मूल्यांकन)

आशीष कुमार पाण्डेय*

महाकवि निराला ने 'राम की शक्ति पूजा' नामक अपनी लम्बी कविता में 'अन्याय जिधर, है शक्ति उधर' सन् 1936 में लिखी थी। उनकी यह उक्ति आज इक्यासी वर्ष बाद भी इक्यासी गुनी सत्य है। पर अन्याय के प्रतिकार हेतु निराला ने मार्ग भी सुझाया था–

'शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन'।

राम की शक्तिपूजा की मुख्य समस्या शक्ति के स्थानान्तरण को लेकर है। चाहे राम का समय हो, चाहे निराला का समय या फिर आज का, शक्ति का संकेन्द्रण ही सभी में अभीष्ट है। यह लम्बी कविता हरेक काल की सामाजिक–राजनीतिक सरोकारों को 'शक्ति' की चौहद्दी में बाँधने का प्रयास करती है। इस कविता की भाँति ही हरेक काल में स्पष्ट दो वर्गों में शक्ति का विभाजन दिखलाई पड़ता है– (1) न्याय के पक्ष में (2) अन्याय के पक्ष में। न्याय पक्ष की अपेक्षा अन्याय पक्ष की ओर शक्ति का संकेन्द्रण अधिक ही दिखाई पड़ता है।

'राम की शक्तिपूजा' का वर्ण्य विषय भी इसी शक्ति संकेन्द्रण में निहित है। चाहे राम रहे हों या न्याय का पक्ष लेने वाला आज का मानव, रावण या अन्याय के प्रतीकों के सामने उसे कठिनाई झेलनी ही पड़ती है। कारण, अन्याय की उग्रता शक्ति के संकेन्द्रण पर भारी पड़ती है। यह सदियों से होता चला आ रहा है। 'राम की शक्तिपूजा' का आरम्भ ही 'रवि के अस्त' होने से होता है। मतलब यह कि सूर्य जो पराक्रम का प्रतीक है, का पराभव हो रहा है। प्रकारान्तर से निराला ने न्याय के ऊपर अन्याय को चतुर्दिक हावी होते हुए दिखाया है। यह गलत भी नहीं है। राम एक पौराणिक पुरुष अवश्य हो सकते हैं किन्तु राम की समस्याएँ उन्हें आज के समस्याग्रस्त मानव के सामने लाकर खड़ा कर देती है।

निराला स्वयं ही जीवनपर्यन्त अन्याय के प्रतिकार हेतु राम की भाँति लड़ते रहे। चाहे कविता की मुक्ति हो चाहे सामाजिक कुरूतियों पर प्रहार, निराला कहीं नहीं डिगे। पर इन सबके बीच उन्हें कभी आन्तरिक तो कभी बाह्य युद्ध झेलने पड़े। राम की शक्तिपूजा का संशयग्रस्त राम और कोई नहीं निराला स्वयं थे–

है अमानिशा, उगलतागगन घन अन्धकार;
खो रहा दिशा का ज्ञान; स्तब्ध है पवन–चार;
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भूधर ज्यों ध्यान–मग्न; केवल जलती मशाल।[1]

'राम की शक्तिपूजा' कई विचार सरणियों को जन्म देती है। राम के मन में गहरी हताशा और निराशा व्याप्त हो गई है। इसी बात को लक्ष्य करके डा0 सूर्य प्रसाद दीक्षित लिखते हैं– ''राम में जय–पराजय का विचित्र द्वन्द्व है। एक ओर गहरी हताशा है–**'बन्धुवर विजय होगी न समर', क्योंकि 'यह नहीं रहा नर–वानर का राक्षस से रण।' दूसरी ओर गहरी आस्था है, दृढ़ इच्छा शक्ति है। राम का मन, कवि के शब्दों में–'जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय' सदा–सर्वथा अप्रतिहत है। कवि ने आरम्भ में ही राम को इस द्वन्द्वात्मक भूमिका पर उतार दिया है। तीव्र अन्तर्द्वन्द्व से आरम्भ होने वाली यह कविता इसीलिए भाँति–भाँति के घात–प्रतिघात प्रारम्भ करती है। इससे रचना में ऊर्जा का संचार हुआ है, साथ ही कुतूहल की सृष्टि भी।''**[2]

मानव मन की स्थिति बड़ी ही विचित्र होती है। जब वह चतुर्दिक समस्याओं से घिर जाता है तो उसका मन बार–बार आद्यन्त समस्या से बाहर जाने की होने लगती है। विधुर जीवन जीते हुए स्वयं निराला ने राम को माध्यम बनाते हुए, समस्याओं से संघर्ष करते हुए एक क्षण के लिए यहाँ से हटने का उद्योग किया है। यह उद्योग राम का है, स्वयं निराला का है और आधुनिक समस्याग्रस्त मानव का भी–

याद आया उपवन
विदेह का–प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन।
नयनों का–नयनों से गोपन–प्रिय संभाषण
पलकों का नवपलकों पर प्रथमोत्थान–पतन
काँपते हुए किसलय,–झरते पराग–समुदाय।
गाते खग नव–जीवन–परिचय, –तरू मलय–वलय
ज्योतिः प्रपात स्वर्गीय,– ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,
जानकी–नयन–कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।[3]

यहाँ युद्ध की विभीषिका में बार–बार राम के स्मरण में सीता का आना भी प्रयोजनवश है। विधुर जीवन जीते हुए पत्नी से निराला का विछोह 'नयनों का नयनों से गोपन प्रिय सम्भाषण' बार–बार उन्हें उद्वेलित करती है। पत्नी जो स्वयं

***शोध छात्र श्रीमंत माधवराम सिंधिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय शिवपुरी (म0प्र0) (जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर)**

शक्ति स्वरूपा है, 'राम की शक्तिपूजा' में, उसके विछोह और उसकी प्राप्ति के विभिन्न साधनों पर पूरा का पूरा कथानक आधारित है, पर समस्या वही है। उस शक्ति स्वरूपा को प्राप्त किया जाए तो कैसे? रावण, जो असुर जाति का शिरमौर है, की रक्षा के निमित्त स्वयं देवी अर्थात् शक्ति उसके साथ खड़ी है–

फिर देखी भीमा मूर्ति आज रण देखी जो
आच्छादित किये हुए सम्मुख समग्र नभ को,
ज्योतिर्मय अस्त्र सकल बुझ–बुझ कर हुए क्षीण
पर महानिलय उस तन में क्षण में हुए लीन।[4]

कितनी विचित्र बात है। जिस शक्ति स्वरूपा सीता को प्राप्त करने के लिए राम उद्योगरत है, उन्हें रोकने के लिए शक्ति ही बाधा बन बैठी है। यहाँ निराला का आत्मबोध युगीन बोध की भावना से ओत–प्रोत है। 'राम की शक्तिपूजा' का रचनाकाल ब्रिटानी सत्ता से जूझती हुई भारतीय जनमानस का संघर्षकाल है। यहाँ भी स्थितियाँ लगभग वैसी ही हैं। शत्रु पक्ष प्रबल है। शक्ति का संकेन्द्रण भी उधर ही है। अन्यायी न्याय पक्ष पर हावी है।

पर इन परिस्थितियों में भी निराला का 'वह रहा एक मन और राम का जो न था'[5] हार कैसे मान सकता है। जाम्बवान की ही भाँति भारतीय जनमानस को (परोक्षतः राम को) गाँधीजी जैसा खेवनहार मिल चुका था जिसने उद्‌बोधन के रूप में कहा–

हे पुरुष सिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण।
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर।।[6]

और इस उद्‌बोधन ने आराधना के रूप में सत्य, अहिंसा के साथ शान्ती से अनशन का मार्ग प्रशस्त किया। भारतीय जनमानस के प्रतीक पुरुष राम ने फिर अनेक यातनाओं के बावजूद भी शक्ति का आराधन कर 'होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन का वरदान प्राप्त किया। परिणामस्वरूप रावण रूपी अंग्रेजी शक्ति को परास्त किया गया।

'राम की शक्तिपूजा' के माध्यम से निराला ने अपने युगबोध को बखूबी से पेश किया है। अन्याय पक्ष के हावी रहने और उसके क्षरण का मार्ग भी उन्होंने प्रशस्त किया। यह तथ्य झुठलाया नहीं जा सकता कि अन्याय का पक्ष अपनी प्रबलता एवं दमन की नीति की वजह से हमेशा मजबूत जरूर दिखता है। पर यदि मनुष्य आत्मिक रूप से निर्बल नहीं है और मन से हार न माने तो बड़े से बड़ा आसुरी

शक्तियों को भी घुटने टेकने के लिए मजबूर कर सकता है।

अन्याय का पक्ष अपने प्रबल अनुसंधान से शक्ति अवश्य प्राप्त कर ले, पर जब न्याय का पक्ष अपने पूर्ण रौरव अवस्था में आकर उसकी सत्ता को चुनौती देता है, तो धर्मवीर भारती के शब्दों में–

जब कोई भी मनुष्य
अनासक्त होकर चुनौती देता है इतिहास को
उस दिन नक्षत्रों की दिशा बदल जाती है।[7]

सन्दर्भ सूची

1. निराला सूर्यकान्त त्रिपाठी, राम की शक्तिपूजा (राम विराग सम्पादित राम विलास शर्मा, पृ0 94), लोकभारती प्रकाश, इलाहाबाद, संस्करण 2011
2. दीक्षित डा0 सूर्य प्रसाद, निराला रचित राम की शक्तिपूजा भाष्य, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 1999
3. राग–विराग (सं0 राम विलास शर्मा), पृ0 94
4. वही, पृ0 95
5. वही, पृ0 103
6. वही, पृ0 100
7. भारती धर्मवीर, अन्धा युग, पृ0 15, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद संस्करण, 2006